राम और कृष्ण : भक्ति साहित्य की सार्वभौमिकता

प्रमुख संपादक : डॉ. लिली भूषण, प्राचार्या
संपादक : डॉ. उर्मिला सिंह, अलका वाधवाना

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

कांदिवली एजुकेशन सोसायटी द्वारा संचालित श्रॉफ कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय तथा
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित द्वि–दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय परिसंवाद

:: अनुक्रम ::

	प्राचार्या का संदेश		I
	संपादकीय		II
	धन्यवाद		III
1.	श्री रामानंद सागर कृत दूरदर्शन धारावाहिक रामायण की जापानी हिन्दी विद्यार्थियों के लिए शैक्षिक योग्यता (सिंहावलोकन)	डॉ. तोमियो मिजोकामी	11
2.	प्रवासी भारतीयों की अस्मिता का प्रहरी : श्रीरामचरितमानस	प्रो. सुरेश ऋतुपर्ण	15
3.	सार्वभौम मानव मूल्यों के प्रतिष्ठापक :गोस्वामी तुलसीदास	प्रो. डॉ. महेन्द्र नाथ राय	23
4.	भक्तिकाल की प्रासंगिकता	डॉ. श्रीराम परिहार	28
5.	भारतीय भाषाओं में राम काव्य	डॉ. उर्मिला सिंह	32
6.	कृष्ण भक्ति काव्य की परम्परा	डॉ. श्यामसुन्दर पाण्डेय	36
7.	कृष्ण भक्ति काव्य में भाषा सौंदर्य एवं संगीत योजना	डॉ. मिथिलेश शर्मा	40
8.	तुलसीदास का लोकनायकत्व	प्रो. सन्दीपना शर्मा	49
9.	तुलसी का परिकल्पित रामराज्य	डॉ रेनू रानी शुक्ला	53
10.	तुलसी साहित्य में लोककल्याण की भावना	डॉ. पुष्पा	56
11.	तुलसी साहित्य में लोक–कल्याण	डॉ. यशवंत सिंह रघुवंशी	58
12.	तुलसी के राम उनकी लोक मंगल भावना	डॉ षम्स अख्तर	65
13.	तुलसीदास की रामभक्ति एवं समन्वय दृष्टि	डॉ. शेख हसीना बानो	68
14.	तुलसी का रामचरितमानस और साहित्य	डॉ. सुषमा यादव	72
15.	तुलसी साहित्य में मानव मूल्य	डॉ. जमुना बीनी	75
16.	तुलसीदास की प्रासंगिकता	डॉ कर्ण शर्मा	80
17.	तुलसीदास की नैतिकता और धार्मिक विचारधारा	डॉ. कमलिनी पाणिग्रही	84
18.	तुलसी साहित्य में मानव–मूल्य	डॉ॰ हरदीप कौर	88
19.	तुलसी साहित्य में मानव मूल्य : रामचरित मानस के विशेष संदर्भ में	डॉ. उर्मिला सिंह तोमर	91
20.	साहित्य और तुलसी का रामचरित मानस	डॉ. प्रवीणचंद्र बिष्ट	96
21.	तुलसी के रामचरितमानस में लोक कल्याण	जी. त्रिवेणी	98
22.	तुलसी के काव्य में मानवीय मूल्य	ए. सुषमा कुमारी	100
23.	काल सापेक्ष नैतिकता और तुलसी की रामकथा	डॉ. पूनम संतोष पटवा	104

24.	रामचरितमानस के अंग्रेजी अनुवादों का योगदान	डॉ .के .जयलक्ष्मी	108
25.	रामकाव्य की सार्वभौमिकता का दस्तावेज़: 'रामचरितमानस'	डॉ.ए.के.बिन्दु	111
26.	मानस की कांति चेता मर्यादापुरुषोत्तम	डी. सत्यलता	115
27.	रामचरितमानस में स्त्री विमर्श	तृप्ति शिवांगकुमार भावसार	118
28.	भारतीय संस्कृति और रामभक्ति साहित्य	राकेश कुमार दुबे	122
29.	कृष्ण भक्ति काव्य में लीला और चरित्र की एकता	डॉ. माला मिश्र	126
30.	दक्षिण आलवारों में रामभक्ति	डॉ. अनिता एस. कर्पूर	134
31.	वैष्णव भक्ति साहित्य और दक्षिण आलवारों की रामभक्ति	के. बी. कृष्ण मोहन	138
32.	वर्तमान संदर्भ में रामचरित मानस की प्रासंगिकता	डॉ. सुशील धर्माणी	142
33.	वर्तमान संदर्भ में राम साहित्य की प्रासंगिकता	डॉ. गीता जगड	145
34.	युगीन परिप्रेक्ष्य में भारतीय रामकथा-साहित्य की प्रासंगिकता	डॉ. भावेश वी. जाधव	149
35.	रामभक्ति काव्य में नारी चेतना के विविध आयाम	प्रा. किरण बी.चौगुले	153
36.	राम भक्ति साहित्य में स्त्री विमर्श	डॉ. धीरेन्द्र शुक्ल	158
37.	आधुनिक रामकाव्यों में नारी विमर्श	डॉ.शेख बेनजीर	165
38.	आधुनिक हिन्दी रामकाव्य में सामाजिक मूल्य	डॉ. सुनिता क्षीरसागर	168
39.	श्रीनिम्बार्क दर्शन में कृष्णभक्ति	डॉ.सी.एम.पटेल	171
40.	कृष्ण भक्ति काव्य की परंपरा	जयंतीलाल एस. मकवाणा	176
41.	कृष्णभक्ति काव्य की पंरपरा में नंददास का 'भँवरगीत'	डॉ. सुनील बापू बनसोडे	182
42.	मध्यकालीन हिन्दी साहित्य में कृष्ण भक्ति काव्य परम्परा	डॉ. अजय पटेल डॉ. भरत पटेल	185
43	कृष्ण भक्ति साहित्य में लीला : सामाजिक संदर्भ	डॉ.सुरेशकुमार केसवानी	188
44	कृष्ण–भक्ति काव्य में भ्रमरगीत–परम्परा	प्रा. आभा खेडेकर	191
45	कृष्ण भक्ति साहित्य में लोक कल्याण एवं दर्शन	डॉ. रमा सिंह	195
46	चित्रकला के बदलते आयाम राम और कृष्ण कथा के संदर्भ में	नम्रता प्रसाद	198
47	भक्ति आंदोलन की सामिजिक पृष्ठिभमूमि	डॉ. एन. सत्यनारायण	203
48	भक्ति आन्दोलन की सामाजिक एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि	ज्योति जैन	208
49	भक्ति आन्दोलन के संदर्भ में मीरा का काव्य	डॉ. सरोज सिंह	212
50	मध्ययुगीन सामाजिक परिवेश	डॉ. बाल कवि सुरंजे	218

रामचरितमानस में स्त्री विमर्श

तृप्ति शिवांगकुमार भावसार
एम.पी.शाह आर्ट्स एन्ड सांयस कॉलेज,
सुरेन्द्रनगर, गुजरात।

वर्तमान समय विमर्शों का युग माना जाता है। विश्व स्तर पर राजनीतिक परिवर्तनों से आए बदलाव की अभिव्यक्ति साहित्य में व्यापक फलक पर हो रही है और इसी के साथ राजनीतिक स्तर पर उठे विमर्शों का साहित्य में प्रस्तुत होना सहज है। पिछले कुछ दशकों से हिन्दी साहित्य में इस प्रकार के महत्त्वपूर्ण विमर्शों की चर्चा बड़े जोर–शोर से सुनाई पड़ रही हैं। साहित्यिक रचना का विमर्शगत अध्ययन शुरू होने से रचना (कृति) के मूल्यांकन के मानदंड बदले हैं। साथ ही उसके विश्लेषण की पद्धति में बदलाव आया है। पहले रचना का विश्लेषण परंपरागत आलोचना पद्धति से किया जाता था, अब रचना की भीतरी संरचना पर बल देने की प्रवृत्ति बढ़ी है। इतना ही नहीं उत्तर–आधुनिक दौर में रचना का विवेचन–विश्लेषण पाठ केन्द्रित होने के साथ–साथ विविध विमर्शों के आधार पर किया जा रहा है। आज विश्व साहित्य में स्त्री विमर्श, अश्वेत विमर्श, आदिवासी विमर्श, विस्थापन का विमर्श आदि के आधार पर रचना का विश्लेषण किया जा रहा है। भारतीय परिप्रेक्ष्य में दो विमर्श – स्त्री विमर्श और दलित विमर्श की चर्चा सबसे अधिक होती है। यहाँ स्त्री विमर्श की दृष्टि से 'रामचरितमानस' का विश्लेषण किया जा रहा है।

मध्यकालीन हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्श नहीं था। स्त्री विमर्श की शुरूआत सन् 1960 के आस–पास होती है। अब प्रश्न यह उठता है कि मध्यकालीन साहित्य का विमर्शगत अध्ययन करना कहाँ तक उचित है? क्योंकि विमर्शगत अध्ययन डेमोक्रेसी से प्राण पाता है, जो मध्यकाल में नहीं है। स्त्री विमर्श की शुरूआत ही नारी के मत–अधिकार (डेमोक्रेसी) से होती है। स्त्री को मत देने का अधिकार राजनीतिक और सामाजिक धरातल पर तय किया जाता है। जिसमें स्त्री अपने शासक को स्वयं चुनने का अधिकार प्राप्त करती है। लेकिन मध्यकाल में डेमोक्रेसी नहीं थी, इसलिए स्त्री मताधिकार भी नहीं था। अर्थात् स्त्री को शासक चुनने का अधिकार नहीं था। उस समय स्त्री पर पति–परिवार, सामाजिक परंपराओं, रीति–रिवाज आदि का 'शासन' थोपा जाता था।

डेमोक्रेसी की दृष्टि से सीता स्वयंवर का प्रसंग बड़ा रोचक है। स्वयंवर से तात्पर्य है स्वयं के द्वारा वर का चुनाव करना। अर्थात् सीता को यहाँ अपना वर चुनने की स्वतंत्रता है या होनी चाहिए, लेकिन सीता–स्वयंवर में यह शर्त रखी जाती है कि जो राजा शिव के पिनाक धनुष को उठाकर उसकी प्रत्यंचा बांधेगा उसी से सीता का विवाह होगा। यहाँ सीता की क्या इच्छा है यह नहीं पूछा जाता, शर्त सीता ने नहीं रखी थी, उनके पिता द्वारा रखी गयी थी। अर्थात् सीता को स्वयंवर में उपस्थित सबसे वीर पुरुष से ही विवाह करना पड़ेगा। लेकिन यह भी तो हो सकता है कि सीतादि को वीर पुरुष के स्थान पर किसी अन्य प्रकार के गुणों वाला पुरुष पसंद हो। साथ ही यह भी तो हो सकता है कि सीतादि को उपस्थित राजाओं के अलावा कोई अन्य पुरुष पसंद हो। कहने का तात्पर्य यह है कि सीता अपने ही स्वयंवर के नाम पर पिता द्वारा तय की गई शर्तों के अधीन विवाह करती है। यही स्थिति महाभारत में द्रौपदी की है और बौद्ध–काल में यशोधरा की भी है।

अगर इस प्रश्न को छोड़ दें कि मध्यकालीन रचना का नारीवादी अध्ययन करना चाहिए या नहीं और अगर इस दृष्टि से सोचा जाए तो रामचरितमानस के अध्ययन से तत्कालीन युग एवं तुलसीदास के विषय में कुछ बातें स्पष्ट होती हैं।

एक तरफ तुलसीदास ने स्त्री के नकारात्मक पहलुओं को उजागर करके स्त्री की कड़ी आलोचना की है, वहीं दूसरी तरफ स्त्री के सकारात्मक पहलुओं को प्रस्तुत करते हुए उसे सम्मानित भी किया है। भारतीय संस्कृति स्त्री को पूज्य मानती है। स्त्री के पक्ष में "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः"[1] कहा गया है, परंतु तुलसीदास ने स्त्री को ढोल, गँवार, शूद्र, पशु, के समकक्ष रख दिया है। यथा

"ढोल गवाँर सूद्र पसु नारी। सकल ताड़ना के अधिकारी॥"[2]

यह पंक्ति ऐसी कोई स्पष्टता नहीं करती कि किस प्रकार की स्त्री का ताड़न करना चाहिए। सवाल यह उठता है कि क्या सभी स्त्रियां ताड़न की अधिकारी हैं ? नहीं। तो फिर सभी स्त्रियों के लिए यह क्यों कहा गया है? मान लिया जाये कि यह कैकेयी और मंथरा के लिए कहा गया हो, लेकिन क्या माता होने के नाते कैकेयी भरत को राज्य प्राप्त हो यह मंशा नहीं रख सकती ? इस में अनुचित भी क्या है! स्त्री विमर्श इसे अनुचित नहीं मानता। कैकेयी अपने पुत्र के प्रति असीम वात्सल्य भाव रखती है। इसीलिए वह दुःख सहकर भी, पति और समाज से तिरस्कृत होकर भी भरत के लिए राज्य प्राप्त करती है। वाल्मीकि रामायण में तो यह कहा गया है कि कैकेयी का विवाह दशरथ से इसी शर्त पर हुआ था कि राज्य कैकेयी के पुत्र को दिया जायेगा। यह बात स्वयं राम भरत को कहते है–

"पुरा भ्रातः पिता नः स मातरं ते समुद्वहन्।

मातामहे समाश्रौषीद्राज्यशुल्कमनुत्तमम॥"[3]

लेकिन स्थिति यह रही है कि समाज कैकेयी को कलंकित ही मानता आया है।

स्त्री की कुटिलता साबित करने के लिए तुलसीदास ने स्वयं कैकेयी के मुख से मंथरा जैसी स्त्रियों के लिए कहलवाया है कि

"काने खोरे कूबरे कुटिल कुचाली जानि।

तिय बिसेषि पुनिचेरि कहि भरतमातु मुसुकानि॥14॥"[4]

अर्थात् काने, लँगड़े और कुबड़े लोग वैसे ही कुटिल होते है, यदि उनमें स्त्री हुई तो वह अधिक कुटिल एवं कुबुद्धि वाली होती है। तुलसीदास ने मंथरा को भले ही कुटिल एवं कुबुद्धि के रुप में चित्रित किया हो किन्तु वहीं मंथरा कैकेयी के प्रति स्वामीभक्त एवं कर्तव्य परायण भी है। इस तरह मंथरा चाहे समाज के लिए कुटिल स्त्री हो सकती है लेकिन स्त्री विमर्श मंथरा को अपनी स्वामिनी के पुत्र को राज्य दिलाने के लिए, उसका हक दिलाने के लिए कूटनीति का आचरण करते हुए देखती है।

स्त्री का स्वभाव विनयशील, लज्जाशील, संयमशील एवं सहिष्णु होता है। स्त्री दया, माया, ममता, प्रेम, श्रद्धा, करुणा, लज्जा आदि गुणों से युक्त होती है। भारतीय संस्कृति में स्त्री के इन्हीं गुणों की प्रशंसा की गई है। तुलसीदास "रामचरितमानस" में सीता के यही गुणों को निरूपित करते हैं। सीता श्री राम तथा लक्ष्मण के साथ वन–गमन करती है तब गाँव की ग्रामीण स्त्रियाँ सीता को पूछती है कि ये तुम्हारे कौन हैं ? तब सीता लज्जित होकर कहती है

बहुरि बदनु बिधु अंचल ढाँकी। पिय तन चितइ भौंह करि बाँकी॥

खंजन मंजु तिरीछे नयननि। निज पति कहेउ तिन्हहि सियँ सयननि॥[5]

यहाँ पर सीता अपने मुख को आँचल से ढँककर श्री राम की और निहारकर भौंहें टेढ़ी करते हुए इशारे से कहती है कि ये मेरे पति हैं। यहाँ सीता अपने पति का नाम नहीं लेती है। भारतीय संस्कृति में इसी चीज को महत्त्वपूर्ण माना गया है। तत्कालीन परिवेश में तुलसीदास द्वारा वर्णित भारतीय स्त्री का इस प्रकार का

व्यवहार एक दृष्टि से उचित जान पड़ता है किन्तु स्त्री विमर्श भारतीय संस्कृति की इन धारणाओं का, स्त्री के ऐसे (आदर्श) स्वभाव का विरोध करता है।

'रामचरितमानस' की रचना तुलसीदास ने की है अर्थात् यह एक पुरुष के द्वारा लिखी गई कृति है। अतः इसमें एक पुरुष (तुलसीदास) के विचार दबदबा बना रहना सहज है। 'रामचरितमानस' में तुलसीदास की स्त्री संबंधित जो पंक्तियाँ प्राप्त होती हैं वह द्वंद्व उत्पन्न करने वाली हैं। तुलसीदास के ऐसे विचार विमर्शगत अध्ययन की जमीन तैयार करते हैं। अतः इसे विमर्श के अर्थ में परिभाषित किया जा सकता है। सीता–स्वयंवर प्रसंग को ही लिया जाए तो इसमें विवाह सीता का हो रहा है, लेकिन किस प्रकार के पुरुष से होगा यह एक पुरुष–जनक ही तय करता है। इसी प्रकार तुलसीदास 'रामचरितमानस' में स्त्री के आदर्श रुप को अभिव्यक्ति करने के साथ पुरुष वर्चस्व को भी स्थापित करते हैं। उन्होंने रावण–पुरुष के मुख से कहलवाकर स्त्री पर अवगुणों का आरोप लगाया है। यथा

नारि सुभाउ सत्य सब कहहीं। अवगुन आठ सदा उर रहहीं॥

साहस अनृत चपलता माया। भय अबिबेक असौच अदाया॥[6]

अर्थात् स्त्री के हृदय में हमेशा के लिए है साहस, झूठ, चंचलता, माया (छल), भय (डरपोकपन), अविवेक (मूर्खता), अपवित्रता और निर्दयता जैसे अष्ट – अवगुण होते ही है। स्त्री विमर्श इस प्रकार के पुरुष वर्चस्व का विरोध करता है।

'रामचरितमानस' में उर्मिला एक ऐसा उपेक्षित स्त्री चरित्र है जो पतिव्रत धर्म एवं आदर्श के नाम पर पति की आज्ञा का पालन करती है, पति की इच्छा पूर्ण करते हुए स्वयं को मिटा देने में भी नहीं झिझकती। यहाँ उर्मिला की क्या इच्छा है –इसे जानने की किसी ने कोशिश नहीं की। सीता पति श्रीराम के आज्ञा पर एक बार अग्नि परीक्षा देती है लेकिन उर्मिला लक्ष्मण की आज्ञा पर पति से दूर राजमहल में ही पति वियोग की अग्नि–सी जलती रहती है। इसी से द्रवीभूत होकर उर्मिला के चरित्र को न्याय दिलाने के लिए मैथिलीशरण गुप्त ने 'साकेत' महाकाव्य की रचना की। तत्कालीन परिस्थितियों के आधीन स्त्री का पतिव्रत धर्म एवं आदर्श स्त्री का रुप भले ही ग्राह्य हो लेकिन वर्तमान समय में इस रुप को स्वीकार करती स्त्री को निर्बल तथा विवश स्त्री के रुप में देखा जाता है। इस तरह तुलसीदास द्वारा चित्रित स्त्री के इस रुप को स्त्री विमर्श नकारता है।

तुलसीदास 'रामचरितमानस' के माध्यम से तत्कालीन तथा उससे पूर्व के संस्कृत कथा–साहित्य में प्रचलित स्त्री संबंधित विचारों को धराशायी करते हुए स्त्री को सार्वजनिक स्थानों पर प्रतिष्ठित करते हैं। मीरा का सार्वजनिक स्थान पर जाना वर्जित था, इसी कारण मीरा का विरोध किया गया था। लेकिन दशरथ की सभी रानियाँ राज–दरबार में उपस्थित रहती है, तुलसी की सीता भी राम के दरबार जैसे सार्वजनिक स्थान पर आदर और सम्मान से उपस्थित रहती है। इतना ही नहीं वन गमन में हर जगह साथ रहती है और वन में राम की सभा में भी वह उपस्थित रहती है।

कुल मिलाकर स्त्री विमर्शगत अध्ययन की दृष्टि से 'रामचरितमानस' में उपर्युक्त मुद्दे चर्चा का केन्द्र बनते हैं। यह चर्चा के विषय परिवेश की अभिव्यक्ति करते हैं, साथ ही तुलसीदास के स्त्री संबंधी विचार को भी प्रस्तुत करते है। एक पुरुष रूप में तुलसीदास 'रामचरितमानस' में स्त्री के आदर्श रूप की अभिव्यक्ति के नाम पर पुरुष वर्चस्व स्थापित करते हुए दिखाई देते हैं। यद्यपि तुलसीदास 'रामचरितमानस' के माध्यम से मुगलकाल में फैले सामाजिक दूषणों को दूर करने का जो प्रयास करते हैं उसमें स्त्री से संबंधित सती प्रथा, स्त्री पराधीनता, बहुपत्नीत्व आदि का विरोध दिखाई देता है। वह स्त्री की असहाय स्थिति से दुःखी होते है। यहाँ तक की 'रामचरितमानस' की कथा ही सीता के रूप में पत्नी (स्त्री) को वापस लाने से जुड़ी है। ऐसे स्थानों पर तुलसीदास स्त्री के समर्थक बनकर उपस्थित होते हैं। स्त्री विमर्श की दृष्टि से इसकी सराहना भी की जाती है।

संदर्भ

1. सं. पं. श्री हरगोविंद शास्त्री, मनुस्मृति, 3/56
2. तुलसीदास, रामचरितमानस, सुंदरकांड, 58/3 +
3. वाल्मीकि रामायण, अयोध्याकांड, 107/3
4. तुलसीदास, रामचरितमानस, अयोध्याकांड, 14
5. तुलसीदास, रामचरितमानस, अयोध्याकांड, 16/3–4
6. तुलसीदास, रामचरितमानस, लंकाकांड, 15 (ख) / 1–2

+ इस शोध–प्रपत्र में 'रामचरितमानस' के संदर्भ हिन्दी समय पर उपलब्ध 'रामचरितमानस' इ–कंटेंट से लिए गए हैं, इसका लिंक है–www.hindisamay.com/contentDetail.aspx?id=966&pageno=1